प्रश्न: सावधान करना और डाँटना में क्या अंतर है?

उत्तर: आइए शास्त्र से शुरू करें:

2 तीमुथियुस 4:1–2
“मैं तुम्हें परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की
उपस्थिति में याद दिलाता हूँ, जो जीवित और मृत को न्याय
देगा; और उसकी प्रकटता और राज्य के द्वारा: परमेश्वर का वचन प्रचार करो; समय पर और समय से बाहर तैयार रहो; उपदेश दो,
डाँटो और प्रेरित करो, पूरी धैर्य और शिक्षा के साथ।”

यहाँ पौलुस तीमुथियुस को विश्वासपूर्वक परमेश्वर के वचन की सेवा करने का आदेश दे रहे हैं। उन्होंने तीन अलग-अलग क्रियाओं का प्रयोग किया है: उपदेश देना, डाँटना, और प्रेरित करना, जो सुधार और आध्यात्मिक मार्गदर्शन के अलग-अलग स्तर को दर्शाते हैं।

1. सावधान करना (उपदेश देना)

परिभाषा: सावधान करना उस गलती या पाप की ओर संकेत करना है, जिससे व्यक्ति पछताव और सुधार की ओर बढ़ सके। यह सुधारात्मक होता है,

लेकिन अक्सर कोमल और शिक्षाप्रद होता है।

उदाहरण: एक माँ अपने बच्चे को आलस्य के लिए सावधान करती है, बताती है कि आलस्य क्यों हानिकारक है, और सुधार के उपाय सुझाती है।

बाइबिल संदर्भ:
इफिसियों 6:4: “और पिता लोग, अपने बच्चों को क्रोध में न
लाएँ, परन्तु उन्हें प्रभु की आज्ञा और शिक्षा में पालें।”

सावधानी देना परमेश्वर के धैर्यपूर्ण सुधार के अनुरूप है। यह विश्वासियों को अपनी गलतियों को पहचानने, उनसे सीखने और आध्यात्मिक रूप से बढ़ने का अवसर देता है। नए विश्वासियों को, जो आध्यात्मिक रूप से अपरिपक्व हैं, अक्सर कठोर डाँट की बजाय सावधान करने की आवश्यकता होती है।

2. डाँटना

परिभाषा: डाँटना अधिक कठोर और अधिकारपूर्ण सुधार है। यह पाप की निंदा करता है और तुरंत उसके अंत का आदेश देता है। डाँटना सुझाव नहीं है; इसमें अधिकार है।

उदाहरण: एक माँ अपने बच्चे को चोरी करने के लिए डाँटती है और स्पष्ट रूप से कहती है कि यह दोबारा नहीं होना चाहिए।

सामाजिक उदाहरण: सरकारें हत्या, भ्रष्टाचार या बलात्कार जैसे कार्यों को डाँटती हैं और उन्हें अवैध घोषित करती हैं।

बाइबिल संदर्भ:
1 कुरिन्थियों 5:11–13:
“…यदि कोई भाई पाप करता है जैसे व्यभिचार, लोभ, मूर्तिपूजा, अपमान, शराब पीना या धोखा देना, तो उससे न मिलो, न खाने पीने में सम्मिलित हो… ‘बुरे व्यक्ति को अपने बीच से अलग करो।’”

डाँटना कभी-कभी स्थायी पाप के लिए अस्थायी बहिष्कार भी शामिल कर सकता है, ताकि चर्च की पवित्रता बनी रहे।

डाँटना परमेश्वर की पवित्रता और न्याय पर आधारित है। यह चर्च में पाप के फैलाव को रोकता है और मसीह के अधिकार का प्रतिबिंब है। यह व्यक्तिगत सुधार और सामूहिक पवित्रता दोनों के लिए आवश्यक है।

3. □□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□

□□□□	□□□□□□ □□□□	□□□□□□
□□□□□□□□	□□□□ □□□□□, □□□□□□□ □□□□, □□□□□□□□□□	□□□ □□ □□□□□, □□□ □□□□□, □□□□ □□ □□□□□□□
□□□□□	□□□□, □□□□□□□□□□, □□□□□□ □□□□	□□□□, □□□□□□□□□□, □□□□□□□□□
□□ □□□□□ □□□□	□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□	□□□□□ □□□, □□□□□□ □□□□□□, □□□□ □□ □□□□□
□□□□□□ □□□□□□	□□□□□□□□ 6:4, □□□□□□□□□□ 3:16	1 □□□□□□□□□□ 5:11–13, 2 □□□□□□□□□ 4:2
□□□□□□	□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□	□□□□□□□, □□□□□□□□□, □□□□□, □□□□□□□□□□

□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□; □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□

---

4. □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□

□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□:

> □□□□ *9:42:*
> “□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□, □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□, □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□”

यहाँ डाँटना अधिकारपूर्ण है; यह आत्मा को जाने का आदेश देता है। यह आध्यात्मिक आदेश है, अनुरोध नहीं। इसी तरह, विश्वासियों को पाप और शत्रु पर आध्यात्मिक अधिकार प्राप्त है, जो परमेश्वर के राज्य को दर्शाता है।

निष्कर्ष

सावधान करना: कोमल सुधार और शिक्षा; छोटी गलतियों या आध्यात्मिक अपरिपक्वता
के लिए।
डाँटना: कठोर, अधिकारपूर्ण आदेश; गंभीर और जिद्दी पाप या आध्यात्मिक सुरक्षा के लिए आवश्यक।

दोनों ही आध्यात्मिक वृद्धि, पवित्रता और चर्च अनुशासन के लिए आवश्यक हैं, परमेश्वर के वचन और प्रेम के अनुसार।

“भगवान हमें आशीर्वाद दें और मार्गदर्शन करें कि हम उनका वचन सच्चाई से उपयोग करें — सावधान करने, डाँटने और प्रेम में पुनर्स्थापित करने के लिए।”

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:

सावधान करना और डाँटना में अंतर (2 तीमुथियुस 4:2)

WhatsApp